दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001
(नैक प्रत्यायित 'B++' श्रेणी)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : *dnpggkp@gmail.com*
website : www.dnpgcollege.edu.in

दिनांक 15.12.2025

प्रकाशनार्थ

दिनांक 15 दिसंबर 2025 गोरखपुर। दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय के रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग द्वारा 'विजय दिवस' की पूर्व संध्या पर विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य वक्ता प्रोफेसर विनोद कुमार सिंह, विभागाध्यक्ष, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, दी0द0उ0 गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर ने अपने उद्बोधन में कहा कि बांग्लादेश का अभ्युदय तो भारत–पाकिस्तान के विभाजन के साथ हो गया था, क्योंकि तात्कालिक. पूर्वी पाकिस्तान (वर्तमान बांग्ला देश), एवं पश्चिमी पाकिस्तान (वर्तमान पाकिस्तान) से पूरी तरह से भिन्न था। पूर्वी पाकिस्तान की भौगोलिक परिस्थितियों के कारण भारत को अपनी सैन्य तैयारी में समय लगा। 1971 के भारत–पाकिस्तान युद्ध में भारत को महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त हुई। भारत की तीनों सेनाओं के सहयोग तथा सामंजस्य के कारण हमने 93000 सैनिकों को आत्म समर्पण के लिए मजबूर किया। इस युद्ध में तत्कालीन रक्षा मंत्री जगजीवन राम की भी सराहनीय भूमिका थी। साथ ही पूर्वी मोर्चे के प्रमुख लेफ्टिनेंट जनरल जगजीत सिंह अरोड़ा ने भी इस युद्ध में न केवल अदम्य साहस का परिचय दिया। अपितु ऐसी स्त्रातजिक और सामरिकी का प्रयोग किया कि पाकिस्तान सेनानायक जनरल ए के नियाजी को आत्मसमर्पण करने के लिए विवश होना पड़ा। इस प्रकार विश्व राजनीति में एक नवीन राष्ट्र का अभ्योदय बांग्ला देश के रूप में हुआ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो.(डॉ.) ओम प्रकाश सिंह ने कहा कि कश्मीर पर आधिपत्य स्थापित करना पाकिस्तान की नीति का प्रारंभ से ही प्रमुख उद्देश्य रहा है। प्रत्यक्ष युद्धों में भारत के विरूद्ध सफलता न मिलने पर पाकिस्तान ने आतंकवाद, घुसपैठ और आंतरिक अस्थिरता फैलाने की रणनीति अपनाई। 1970 के आम चुनावों में शेख मुजीबुर्रहमान को स्पष्ट बहुमत मिलने के बावजूद सत्ता हस्तांतरण न होने से पूर्वी पाकिस्तान में असंतोष उत्पन्न हुआ, जिसे दबाने के लिए सेना द्वारा किए गए अत्याचारों से शरणार्थी संकट गहराया। इन्ही कारणों से 1971 का भारत–पाकिस्तान युद्ध हुआ, जिसमें भारत ने निर्णायक विजय प्राप्त की और बांग्लादेश एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में अस्तित्व में आया। इस युद्ध ने न केवल दक्षिण एशिया की भू–राजनीतिक एवं भू–स्त्रातजिक संरचना को परिवर्तित किया, बल्कि भारत की रणनीतिक क्षमता और अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा को भी सुदृढ़ किया।

कार्यक्रम का संचालन रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग के प्रभारी डॉ. राम प्रसाद यादव ने किया तथा मुख्य वक्ता का स्वागत एवं परिचय विभागीय शिक्षक डॉ. शुभ्रांशु शेखर ने किया।

इस अवसर पर प्रो. नित्यानंद श्रीवास्तव, डॉ. सुनील कुमार सिंह, डॉ. अंशुमान सिंह, नवीन कुमार सिंह, विकास कुमार पाठक, राजकुमार सहित विभागीय छात्र–छात्राएं उपस्थित रहे।

डॉ.(सुनील कुमार सिंह)
सह–प्रभारी, सूचना एवं जनसम्पर्क